डॉ. सुरेश अनंतराव गायकवाड.
एम.ए.पी-एच.डी.
हिन्दी विभागाध्यक्ष,
कला, वाणिज्य महाविद्यालय,
सातारा - 415 002. (महाराष्ट्र)

स्नातकोत्तर अध्यापक,
शोध निर्देशक,
सदस्य, शिवाजी विश्वविद्यालय,
हिन्दी प्राध्यापक परिषद, कोल्हापुर

-: प्रमाणपत्र :-

मैं, डॉ. सुरेश अनंतराव गायकवाड, हिन्दी विभागाध्यक्ष, कला, वाणिज्य महाविद्यालय, सातारा, यह प्रमाणित करता हूँ, कि प्रा. श्रीमती शकुंतला गणपतराव पाटील ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम.फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध " उषा प्रियम्वदा के उपन्यासों में बदलते सामाजिक संदर्भ" मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। श्रीमती शकुंतला गणपतराव पाटील के प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह से सन्तुष्ट हूँ।

सातारा :

दिनांक : 23 नवम्बर 1990.

Shaiwed

(डॉ. सुरेश अनंतराव गायकवाड)

प्रख्यापन

उषा प्रियम्वदा के उपन्यासों में बदलते सामाजिक संदर्भ

यह लघु-शोध-प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल. (हिन्दी) के लघु-प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गयी है।

Patil

सातारा :

(प्रा. शकुंतला गणपतराव पाटील)

दिनांक : 23 नवम्बर 1990.

प्राक्कथन

साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। समाज का प्रतिबिम्ब साहित्य में देखा जाता है। समाज में रहनेवाला लेखक समाज का अवलोकन करता है। समाज में होनेवाली अच्छाई उसे सुहाती है, उसी प्रकार समाज में होनेवाली बुराई उसे व्यथित करती है। इस अच्छे-बुरे का कुछ प्रसन्नता से तथा कुछ व्याकुलता से वह अपनी कलम द्वारा चित्रण करता है। यह साफ है कि इसके पीछे उसका उद्देश्य स्वांत:सुखाय जितना होता है उतना ही पाठकों को इस बात से अवगत कराना होता है कि समाज में चली हुई स्थिति को देखना। और यह देखना सिर्फ दर्शक की मर्यादा तक सीमित रहकर देखना नहीं तो इसमें कुछ परिवर्तन या बदल अपेक्षित होते हैं।

साहित्य मानव-कल्याण की भूमिका को लेकर चलता है। कभी-कभी साहित्यकार यह सोचकर चलता है कि वह और सत्य के पास पहुँचे जिसमें मानवता के न्याय की, हित की व्यापक भूमिका होती है। उषा प्रियम्वदा हिन्दी की ऐसी लेखिका है, जो जन्मी, पढ़ी-लिखी तथा अध्ययन-अध्यापन का काम इलाहाबाद जैसे शहर में जिसने किया। लेकिन उसका उर्वरित जीवन-काल अमरिका जैसे प्रगत देश में बीत रहा है। उसपर भारतीय संस्कृति तथा परिवेश का गहरा प्रभाव है। साथ ही साथ अमरिकी वातावरण का भी कुछ असर पड़ रहा है। साहित्य की छात्रा होने के कारण उसने पाश्चिमात्य परिवेश में रहकर भारतीय संस्कृति पर अपने साहित्य में कुछ प्रश्नचिन्ह निर्माण किये हैं। उषाजी के "रूकोगी नहीं... राधिका" इस उपन्यास को पढ़ाने के हेतू मैंने जब देखा तब यह अनुभव किया कि समाज में कुछ परिवर्तन नजर आ रहे हैं। युवा-पीढ़ी कुछ उसे अनुभव कर रही है। "राधिका" के द्वारा मुझे यह बदलाव तीव्र मात्रा में अनुभव हुआ। और औत्सुक्य के कारण उषाजी के अन्य उपन्यासों-"पचपन खम्भे लाल दीवारें", "शेष यात्रा" को मैंने पढ़ा। "वापसी" कहानी तथा उपन्यास पढ़कर मैं उषा प्रियम्वदा के सामाजिक विचारों से अत्याधिक प्रभावित हुई। और उसी प्रभाव का प्रतिफलन है-मेरा एम.फिल हिन्दी का शोध-विषय "उषा प्रियम्वदा के उपन्यासों में बदलते सामाजिक संदर्भ।"

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध का अध्ययन मैंने श्रद्धेय गुरूवर डॉ. सुरेश अनंतराव गायकवाड के निर्देशन में किया। अपने कार्य में व्यस्त होने के बाबजूद उन्होंने हर समय बड़ी तत्परता और तन्मयता से मौलिक मार्गदर्शन किया है। इसलिए मैं उनकी हृदय से ऋणी हूँ। साथ ही श्रद्धेय गुरूवर डॉ. गजानन सुर्वेजी के समय-समय पर दिये गये मौलिक सुझावों एवं उनके समृद्ध वैयक्तिक ग्रंथालय से भी मैं लाभान्वित हो चुकी हूँ।

अतः मैं डॉ. सुर्वेजी के प्रति हृदय से कृतज्ञ हूँ।

आदरणीय प्राचार्य पी.बी.चव्हाण, डॉ. व्ही.के.मोरे, प्रा. टी.आर.पाटील तथा लालबहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा के ग्रन्थपाल शिवाजीराव पाटील एवं राजे रामराव महाविद्यालय, जत के ग्रंथपाल सुरेश नाईकजी की सहायता प्राप्त हुई । मैं उन सब के प्रति कृतज्ञता प्रगट करती हूँ।

प्रस्तुत शोध-कार्य में मेरे पति प्रा. ए.बी.देसाई, जिन्होंने मुझे उच्च-शिक्षा के लिए प्रोत्साहित किया तथा प्रेमपूर्वक सहयोग दिया, उसे भूलना संभव नहीं। उनका तथा परिवार के सभी सदस्यों का "प्रेम" ही मेरे जीवन का सम्बल है।

प्रस्तुत शोध-कार्य में जिन ग्रंथोंसे मैं लाभान्वित हुई उन तमाम लेखकों एवं उषा प्रियम्वदा के प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। ज्योति इलेक्ट्रानिक्स टायपिंग सेंटर, कराड के श्री और श्रीमती नादेडकरजी ने टंकलेखन का कार्य तत्परता से किया, इसलिए मैं उनकी आभारी हूँ।

लेखक की कृति के बारे में विशिष्ट दृष्टि से देखने की पद्धति और प्रक्रिया को अपनाकर मैंने उषा प्रियम्वदा के बारे में अपनी सीमित बुद्धि को ध्यान में रखकर अध्ययन प्रामाणिकता से करने का प्रयास किया है। मेरे इस लघु प्रयास की ओर विद्वद्वर उदारता की दृष्टि से देखेंगे ऐसी मैं उम्मीद करती हूँ।

Patil

सातारा

(प्रा. शकुंतला गणपतराव पाटील)

दिनांक : 23 नवम्बर 1990.